निराला छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं एवं प्रगतिवाद के भी - सिद्ध कीजिए

हिंदी साहित्य में सन् 1915 ई० से सन् 1961 ई० तक निराला-काव्य की एक सुदीर्घ परम्परा है। निराला जी की समस्त काव्य-यात्रा के तीन सोपान स्पष्टतः परिलक्षित होते हैं—

प्रथम : छायावाद-रहस्यवाद - सन् 1915 से सन् 1937-38 तक

द्वितीय : प्रगतिवाद - सन् 1938 से सन् 1946 तक

तृतीय : अध्यात्म साधना - सन् 1946 से सन् 1961।

निराला ने न केवल छायावाद का अपितु छायावादोत्तर काव्य की भी सभी प्रवृत्तियों का प्रवर्तन किया। द्विवेदीयुगीन कल्पनाहीनता और शुष्क इतिवृत्तात्मकता के स्थान पर नये भाव-बोध तथा नयी शैली की जिस कविता प्रवर्तन छायावाद में हुआ, उसमें निराला का महत्वपूर्ण योगदान है। निराला समस्त शताब्दी के कवि थे, क्योंकि निराला का काव्य न केवल छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद अग्रणी हैं, अपितु परवर्ती नये कलाकारों को वर्षों तक व्यापक तथा गंभीर रूप से प्रेरित एवं अनुप्राणित करते रहे। प्रगतिवादियों ने निराला का स्तवन किया, प्रयोगवादियों ने उन्हें अपना प्रेरक माना और नवगीतवादी कवियों ने उन्हें हृदय से अपना पथ-प्रदर्शक स्वीकार किया। निराला का काव्य विषय, भाव, शैली और भाषा के वैविध्य का कला वनस्थली है।

हिंदी साहित्य में सन् 1916 से सन् 1937-38 की कालावधि को छायावाद युग की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। छायावाद चतुष्टय में प्रसाद निराला, पंत और महादेवी के नामोल्लेख किए जाते हैं। निराला का प्रथम काव्य संग्रह 'परिमल' है, जिसमें 1916 से सन् 1929-30 तक की रचनाएँ संकलित हैं। परिमल की ही कविताओं से निराला छायावाद के अग्रणी कवि कहे गये थे। छायावाद की समस्त विशेषताएँ - प्रकृति का सचेतन रूप में चित्रण, मानवीकरण, प्रकृति से तादात्म्य, संवेदनशीलता, प्रकृति से संदेश तथा प्रेरणा प्राप्ति आदि प्रकृति-प्रयोग की सभी छायावादी विशेषताएँ 'परिमल' की 'संध्या सुन्दरी', जूही की कली, शेफालिका आदि कविताओं परिलक्षित होती हैं। 'यमुना के प्रति' में कवि की छायावादी सूक्ष्म शृंगार चित्रण, अतीत गौरव तथा भावों एवं कला की सूक्ष्मता आदि समस्त छायावादी विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं। निराला काव्य की एक अन्य आयाम सेतुरि है—

राष्ट्रीय-भावना। परिमल की 'जागो फिर एक बार', 'शिवाजी का पत्र' आदि कविताओं में राष्ट्रीय ओजपूर्ण भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

यद्यपि निराला की दो परवर्ती प्रमुख प्रवृत्तियाँ - यथार्थवादी-प्रगतिवादी काव्य-रचना तथा भक्ति-भावना क्रमशः उनकी परवर्ती कृतियों में प्रकट हुई हैं, परन्तु उनके बीज भी परिमल की रचनाओं में परिलक्षित होते हैं। इस दृष्टि से परिमल की 'आवाहन' कविता उल्लेखनीय है। 'क्या दूँ', 'परलोक', 'हमें जाना है जग के पार', 'प्रार्थना' आदि गीतों में निराला की अध्यात्म-भावना का आरंभिक रूप दृष्टिगोचर होता है।

परिमल के बाद 'गीतिका' में निराला रचित सन् 1930 से 1936 तक के सौ गीत संकलित हैं, जो 1936 में प्रकाशित हुई। निराला के इस प्रथम गीत-संग्रह में भाव-शब्द प्रबलता, संगीत, माधुर्य, कोमल कांत पदावली आदि सभी गुण हैं। 'वर दे वीणा वादिनी वर दे!', 'भारति जय विजय करे', 'यामिनी जागी', 'सोचती अपलक आप खड़ी', 'सुरभि ही मधु दल', 'नयन वासंती लेगी', 'मौन रही हार', 'सखि वसंत आया' आदि इस संग्रह के श्रेष्ठ गीत हैं। गीतिका के पदों में मुख्यतः प्रेम शृंगार की सूक्ष्म एवं रहस्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है। छायावादी-रहस्यवादी प्रवृत्ति का चरम विकास 'गीतिका' में दिखाई पड़ता है। 'अस्ताचल रवि जल छल-छल छवि' जैसे पदों में रहस्यमय वातावरण अंकित हुआ है, 'प्रातः प्रियतम तुम आओगे चले' जैसे पदों में प्रेम रहस्य की अभिव्यक्ति, 'देकर अंतिम मैं कर रवि गये अपर पार' जैसे पद में प्रकृति के रहस्यमय सौंदर्य और भाव-भंगिमामय भाव का चित्रण तथा 'सुरभी ही पददल' जैसे गीतों में प्रतीकात्मक शैली निराला को मूलतः छायावादी-रहस्यवादी कवि सिद्ध करती है। गीतिका के गीत न केवल निराला के श्रेष्ठ गीत हैं, अपितु छायावाद-रहस्यवाद युग की श्रेष्ठ गीत रचनाएँ हैं।

निराला का 'अनामिका' (द्वितीय काव्य-संग्रह) जो जनवरी 1939 में प्रकाशित हुआ। परिमल की तरह अनामिका निराला का दूसरा प्रतिनिधि काव्य-संग्रह है। इसमें कुछ रचनाएँ तो परिमल काल की हैं, कुछ अनूदित हैं और 'सरोज स्मृति', 'मित्र के प्रति', 'वन बेला' आदि कुछ नवीन रचनाएँ हैं। निराला की प्रसिद्ध आख्यानक रचना 'राम की शक्ति पूजा' भी इसी काव्य संग्रह में है। अनामिका की 'दान', 'वन बेला', 'मित्र के प्रति' जैसी रचनाएँ व्यंग्य काव्य का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। 'दान' कविता में कवि की सामाजिक करुणा, मृतप्राय कंकाल शेष भिक्षुक के करुण चित्रण में दृष्टव्य है। निराला जी ने धार्मिक ढोंग और मनुष्यता के ह्रास पर तीखा व्यंग्य किया है। 'तोड़ती पत्थर' में आर्थिक विषमता और निम्न वर्ग की विषमता का जो चित्रण हुआ है, वह कवि की विकसित सामाजिक चेतना का परिचायक है। 'उद्बोधन' कविता परिमल के 'बादल राग' के ही पूरक हैं।

अनामिका में एक ओर स्वच्छन्द प्रेम और सौंदर्य की व्यंजक 'प्रेयसी' जैसी कविता है, तो दूसरी ओर महाकाव्य के औदात्य से ओतप्रोत ओजपूर्ण दीर्घ कविता 'राम की शक्ति पूजा' है। निराला की वैयक्तिक करुणा उनकी सरोज स्मृति में साकार हो गयी है।

'वारिद वंदना' में सुन्दर प्रकृति चित्र प्रकट हुए हैं और वसंत की ऋतु के प्रति लिखी कविताओं में प्रकृति के आलंबन रूप और उसमें प्रणय-भावों की प्रवृत्ति है।

निराला रचित खण्डकाव्य 'तुलसीदास' सन् 1938 में प्रकाशित हुआ। इसमें तुलसीदास के [illegible] में महाकाव्योचित औदात्य और गांभीर्य प्रदान किया गया है। चित्रकूट की यात्रा, अज्ञान, नारी सौन्दर्य और प्रेम का प्रकाशन बहुत भव्य हुआ है। ब्रजमण्डल में गोपी प्रेम, तुलसीदास द्वारा पत्नी रत्नावली का स्मरण तथा वियोग में स्मरण निराला के चिर परिचित स्मृति शृंगार के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसमें एक ओर प्रकृति को भारतमाता या भारतीय संस्कृति के प्रेरक प्रतिरूप बताया है, तो दूसरी ओर रत्नावली को शारदा, ज्ञान की ज्योति आदि प्रेरणा-शक्ति का रूप प्रदान किया गया है।

निराला जी की उपर्युक्त काव्य-कृतियों के अति संक्षिप्त अध्ययन से स्पष्ट है कि प्रारंभ से ही निराला जी ने विविध प्रवृत्तियों को अपनाया तथापि समस्त छायावाद युग (सन् 1918 से सन् 1937-38 तक) में उन्होंने मुख्यतः छायावादी प्रवृत्तियों का पोषण किया। इस काल की उनकी प्रगतिशील रचनाएँ भी भावना और कल्पना की अभिव्यक्ति की दृष्टि से प्रगतिवाद की उग्र यथार्थता की अपेक्षा छायावादी काव्य के जीवन-बोध में ही अधिक निकट हैं।

छायावाद के अंत के साथ ही निराला की प्रमुख प्रवृत्ति में भी परिवर्तन परिलक्षित हुआ। सन् 1938 से 1946 तक निराला की काव्य-साधना का दूसरा चरण है जिसमें पूर्ववर्ती छायावाद की समाप्ति और नवीन यथार्थोन्मुख प्रगतिवादी प्रगति का शंखनाद हुआ। इस काल में निराला की प्रमुख काव्य-प्रवृत्ति यथार्थ प्रगतिवादी काव्य रचने की रही। इस काल में उनके चार काव्य-संग्रह — कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला और नये पत्ते प्रकाशित हुए।

निराला जी की सर्वाधिक विवादास्पद रचना 'कुकुरमुत्ता' 1942 ई० में प्रकाशित हुई जो निराला जी की यथार्थवादी प्रवृत्ति, व्यंग्य वृत्ति, नयी प्रगतिशील सामाजिक चेतना की परिचायक है। इस प्रतीकात्मक रचना में एक तो निराला जी ने ऐयाश नवाबों, रईसों, पूँजीपतियों अथवा ऐसे शासकों पर व्यंग्य किया है, जो स्वयं ऐश्वर्य-विलास में डूबे रहते हैं, किसान, मजदूर, मालियों को परेशान करते हैं। विदेशी पौधों, वस्तुओं से अपने घर-बाग सजाते हैं। व्यभिचारी हैं, अहंवादी हैं, शोषक हैं। गुलाब उच्च शोषक वर्ग, बुर्जुआ मनोवृत्ति तथा विचार पद्धति या संस्कृति का पोषक है, प्रतीक है एवं कुकुरमुत्ता सर्वहारा वर्ग का प्रतीक। कुकुरमुत्ता शोषक पूँजीपति को फटकारते हुए कहता है :-

'अबे सुन बे गुलाब
भूल मत गर, पाई खुशबू रंगो आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।'

'अणिमा' सन् 1937-38 से 1943 ई० तक की चुनी हुई 45 कविताओं का संग्रह है जो सन् 1943 में प्रकाशित हुआ। अणिमा में कुछ रचनाएँ रहस्यपरक हैं।

कुछ प्रार्थना, रहस्यवाद, प्रकृति-चित्रण, देशप्रेम की भावनाओं से ओतप्रोत छायावादी रचनाएं तथा कुछ यथार्थवादी व्यंग्यपरक प्रगतिवादी रचनाएं हैं। कवि की व्यंग्यात्मक प्रवृत्ति का इनमें पूर्ण परिचय मिलता है। 'सड़क के किनारे' कविता में तो छायावाद [illegible] के अनुपयुक्त हैं। निराला जी ने कल्पना की रंगीनियों को त्याग कर इन कविताओं में यथार्थ [illegible] साथ का अनुभूतिपूर्ण है। 'यह है बाजार', दाना आदि कुछ कविताओं में व्यंग्य का प्रखर रूप में उभरा है।

जनवरी सन् 1946 में प्रकाशित निराला जी का 'बेला' उर्दू शैली की गजलों और नये लय गीतों का संग्रह है जिसमें विभिन्न यथार्थवादी विषयों को अपनाया गया है। बेला में विषय की दृष्टि से नवीनता का महत्त्वपूर्ण रूप है और वह है कवि का स्पष्टतः प्रगतिवादी रूप। प्रगतिशील तो वे प्रारंभ से ही थे, अब वर्ग संघर्ष, सर्वहारा वर्ग की प्रतिष्ठा, पूंजीपतियों का विनाश, ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्ति, जाति, वर्ण बंधन-मोचन के लिए खुलकर संघर्षमय चित्रण करने लगे।

वस्तुतः निराला का विद्रोही प्रचण्ड रूप बेला और 'नये पत्ते' में ही स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है। प्रगतिवादियों को वे स्पष्ट स्वरों में कहते हैं—

आज अमीरों की हवेली किसानों की होगी पाठशाला।
धोबी पासी चमार तेली खोलेंगे अंधेरे का ताला।

निराला जी का प्रसिद्ध व्यंग्य काव्य-संग्रह 'नये पत्ते' सन् 1946 में प्रकाशित हुआ। जिसमें कवि की यथार्थवादी प्रवृत्ति, सामाजिक व्यंग्य चित्रण तथा उर्दू शैली के नये बंध प्रयोग पाये जाते हैं। नयेपत्ते में आधी से अधिक रचनाएँ कवि यथार्थपरक प्रगतिवादी दृष्टि की सूचक है - 'श्रोओं के पेट में बहुतों को आना पड़ा', कुत्ता भौंकने लगा, झींगुर डटकर बोला, छलांग मारता चला गया, डिप्टी साहब आये, महँगू महँगा रहा, खुशखबरी, दगा की, प्रेम संगीत, गर्म पकौड़ी, राजे ने रखवाली की, चर्खा चला, मास्को डायलॉग्स आदि कविताओं में सामाजिक व्यंग्योक्तियों की भरमार है। वर्ग विषमता एवं वर्ग संघर्षशीलता का इसमें खुलकर चित्रण हुआ है।

'नये पत्ते' निराला की काव्य-चेतना के विकास की एक महत्वपूर्ण व्यापक कड़ी है। कवि युगपुरुष बनकर समाज, जीवन, धर्म आदि सभी को यथार्थ की कसौटी पर परखते हुए सभी विकृतियों विषमताओं हँसते हुए व्यंग्य का वज्र प्रहार करते हुए अपनी विद्रोही प्रवृत्ति का परिचय देता है, काव्य के नये क्षितिजों का अन्वेषण करता है।

अस्तु, उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि निराला छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं और प्रगतिवाद के भी।

— :०: —